प्रेस विज्ञप्ति

गुरु नानक कॉलेज, धनबाद

गुरु नानक देव व्याख्यानमाला एवं प्रदर्शनी में भारतीय प्रवासी समुदाय और सभ्यतागत सांस्कृतिक निरंतरता पर हुई विस्तृत चर्चा

धनबाद, 3 सितंबर 2026। गुरु नानक कॉलेज, धनबाद के इतिहास विभाग द्वारा IQAC के सहयोग से "गुरु नानक देव लेक्चर सीरीज एवं प्रदर्शनी" का आयोजन कॉलेज के एस. जी. एस. ग्रेवाल ऑडिटोरियम, भूदा कैंपस में किया गया। कार्यक्रम का विषय "भारतीय प्रवासी समुदाय का निर्माण: सभ्यतागत एवं सांस्कृतिक निरंतरता और परिवर्तन का अध्ययन"था। इस अवसर पर मुख्य वक्ता बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय के प्रो. घन श्याम ने भारतीय डायस्पोरा, सभ्यतागत निरंतरता, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समय के साथ हुए सांस्कृतिक परिवर्तनों पर विस्तार से प्रकाश डाला। अपने व्याख्यान में उन्होंने भारतीय प्रवासी समुदाय के ऐतिहासिक विकास पर चर्चा करते हुए दक्षिण-पूर्व एशिया, मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, फिजी, केन्या, युगांडा तथा अन्य क्षेत्रों में भारतीयों के प्रवासन की प्रक्रिया को समझाया। विशेष रूप से अमेरिका में भारतीय समुदाय के विकास तथा Indo-Caribbean समुदाय की विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. घन श्याम ने बताया कि प्रवासी समुदाय केवल आर्थिक अवसरों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जाता, बल्कि अपने साथ भाषा, धार्मिक परंपराएं, रीति-रिवाज, खान-पान, कला और सांस्कृतिक स्मृतियां भी लेकर जाता है।

व्याख्यान के साथ कॉलेज में एक विशेष शैक्षणिक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसमें "नदियों के किनारे की सभ्यता और भाईचारा" की अवधारणा को केंद्र में रखा गया। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने मेसोपोटामिया, मिस्र, हड़प्पा तथा चीनी सभ्यता से संबंधित मॉडल, चित्र एवं तथ्य प्रदर्शित किए। इसके अतिरिक्त पुष्कर मेला, मैथन डैम सहित विभिन्न सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विषयों को भी प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रदर्शनी ने यह संदेश दिया कि नदियां केवल मानव सभ्यता के विकास का आधार ही नहीं रहीं, बल्कि विभिन्न समुदायों के बीच संपर्क, सहयोग, आदान-प्रदान और सांस्कृतिक एकता का माध्यम भी बनीं।

कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रंजना दास ने अपने संबोधन में भारतीय डायस्पोरा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों ने अपनी मेहनत के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और परंपराओं को भी जीवित रखा है। उन्होंने प्रवासन को केवल स्थान परिवर्तन न मानकर संस्कृतियों के बीच संवाद और आदान-प्रदान की प्रक्रिया के रूप में समझने की आवश्यकता पर बल दिया।

कॉलेज के अध्यक्ष सरदार आर. एस. चहल ने अपने संबोधन में डायस्पोरा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सांस्कृतिक परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अलग-अलग सभ्यताओं और संस्कृतियों के बीच संवाद मानव समाज को अधिक समृद्ध और सहिष्णु बनाता है।

कार्यक्रम में गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के अध्यक्ष सरदार गुरचरण सिंह मंझा की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. अभिषेक कुमार सिन्हा ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन प्रो. करुणा सिंह ने प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर भूदा कैंपस के प्रोफेसर इंचार्ज दीपक कुमार, बैंक मोड़ कैंपस की प्रोफेसर इंचार्ज डॉ. वर्षा सिंह, प्रो. मीना मलखंडी, प्रो. संतोष कुमार, प्रो. अमरजीत सिंह, प्रो. दलजीत सिंह, प्रो. पीयूष अग्रवाल, प्रो. सोनू प्रसाद यादव, प्रो. सरिता मधेसिया, प्रो. अर्नब सरखेल सहित महाविद्यालय के अनेक शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

Picture Gallery

GURU NANAK COLLEGE
DHANBAD

GURU NANAK COLLEGE, DHANBAD
NAAC ACCREDITED
GURU NANAK DEV LECTURE SERIES
& EXHIBITION
PROF. GHAN SHYAM
The Making of Indian Diaspora :
A Study of Civilizational and
Cultural Continuity and Change
DEPARTMENT OF HISTORY

NATIONAL WORKSHOP